दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य

दीपावली का त्योहार पूरे भारत में बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। प्रतिवर्ष कार्तिक वदी अमावस्या के दिन श्री महालक्ष्मी जी व सरस्वती का पूजन करके, मिठाई बांटकर व विभिन्न प्रकार की आतिशबाजी चलाकर यह पर्व मनाया जाता है। इस दिन दीपमालिकाएं प्रज्ज्वलित की जाती हैं। हर घर में दीपकों की पंक्तियाँ दिखायी देती हैं। लोग बड़ी प्रसन्नता व ख़ुशी से एक-दूसरे से मिलते हैं। सर्वत्र आनंद व ख़ुशी की लहर छा जाती है। इस दिन व्यापारी वर्ग अपने पुराने हिसाब के बही-खाते बंद करके नए प्रारम्भ करते हैं। परन्तु यह सब क्यों करते हैं? कब से करते हैं? श्री महालक्ष्मी व महासरस्वती कौन है? इनकी पूजा क्यों करते हैं? घर पर दीपक जलाकर, प्रकाश करके मिठाई क्यों बांटते हैं और व्यापारी अपनी रोकडियां क्यों बदलते हैं? इसका रहस्य कोई बिरले ही जानते हैं।

पर्व मनाने का कारण हम यह पर्व श्री लक्ष्मी-नारायण जो सतयुग के प्रथम विश्व महाराजा व विश्व आत्माएं प्रकाशमान रहने से हर घर में सदा ही प्रकाश रहता है अर्थात् अज्ञानरुपी अंधकार नाममात्र को भी नहीं रहता। वहां आज जैसे स्थूल दीपक नहीं जलाने पड़ते अपितु सबके आत्मा रूपी दीपक की ज्योति जलती रहने से सदा प्रकाश ही रहता है। आज हम यह पर्व उक्त राजतिलक के लक्ष्मीपूजन की यादगार के रूप में स्थूल दीपक जलाकर मनाते हैं।

पर्व कब से मनाते आ रहे हैं?

यह पर्व कोई अनादिकाल से हम नहीं मना रहे बल्कि द्वापरयुग में जब से देवी-देवताओं की मूर्ति पूजा शुरू होती है और भक्ति की शुरुआत होती है तब से यह पर्व मनाया जाता है। पुराणों में इसकी अनेक कथाएं भी हैं परन्तु बात लाखों वर्ष की नहीं है बल्कि 2500 वर्षों की ही है क्योंकि परमात्मा ने कल्प 5000 वर्ष का बताया है जिसमें चार युग समान होते हैं।

लक्ष्मी व सरस्वती का रहस्य

दीपावली के दिन हम दोनों की एक साथ पूजा करते हैं परन्तु हमारी पौराणिक धारणा यह है कि दोनों ही देवियां एक-दूसरे की विरोधी हैं। सरस्वती के भक्तों पर लक्ष्मी जी अप्रसन्न रहती हैं तो लक्ष्मी जी के भक्तों पर सरस्वती जी अप्रसन्न रहती हैं। फिर दीपावली के दिन दोनों को एक साथ क्यों पूजते हैं यह कोई सही नहीं बता सकता। परमात्मा कहते ये दोनों देवियां नहीं हैं बल्कि लक्ष्मी देवी है और सरस्वती ब्राह्मणी है, इसको ही जगदम्बा कहा जाता है। यह सबकी सर्व मनोकामनाएं पूर्ण करने वाली

है। लक्ष्मी को तो केवल धन प्राप्ति के लिए ही पूजते हैं। लोगों को यह समझना चाहिए कि लक्ष्मी व सरस्वती इन दोनों की आत्मा एक ही है। इस कारण भक्ति मार्ग में इन दोनों को एक मानकर ही पूजा की जाती है। इनमें आपस में किसी प्रकार का वैर है ही नहीं, विषमता समय की है। सरस्वती ब्रह्माकुमारी कहलाती है। वह ब्रह्मा के साथ पुरुषोत्तम संगमयुग पर ज्ञान पढ़ती और पढ़ाती हैं। अभी इस ज्ञान से वह सतयुग में राधे बनकर लक्ष्मी की प्रारब्ध बनाती है। ब्रह्मा भी परमात्मा से ज्ञान पढ़कर श्रीकृष्ण से नारायण बनने की प्रारब्ध प्राप्त करते हैं और वही ब्रह्मा व सरस्वती की आत्माएं सतयुग में श्री राधे-कृष्ण का शरीर प्राप्त करती हैं। स्वयंवर होने के पश्चात् उनका नाम बदलकर लक्ष्मी-नारायण रखा जाता है और महाराजा-महारानी के रूप में इनका राजतिलक किया जाता है।

इनकी पूजा करने का कारण

सतयुग व त्रेतायुग में तो पूजा होती नहीं अर्थात् यहां भक्ति नहीं होती। सतयुग में 1250 वर्षों में 8 पीढ़ियां लक्ष्मी-नारायण की और 1250 वर्षों में 12 पीढ़ियां सीता-राम की चलती हैं। यहां देवता किसी की पूजा नहीं करते हैं। द्वापर में जब वह जन्म लेते हैं तो सुख-शांति की प्रारब्ध समाप्त हो जाने से आसुरी गुण वाली आत्माएं जो द्वापर से आने लगती हैं उनके संगदोष के कारण इन देवात्माओं के गुणों का लोप होने लगता है। उन्हें दुःख होता है तो अपनी मूर्तियां बनाकर पूजना प्रारम्भ कर देते है।

व्यापारियों की खुशी

सतयुग व त्रेता में स्वर्ग रहता है। सब सम्पन्न व खुश रहते हैं। लक्ष्मी-नारायण के राजतिलक में मिठाई भी बांटते हैं व खुशियां भी मनाते हैं। धन प्राप्त हो, बुद्धि ठीक काम करे इसलिए व्यापारी वर्ग बड़ी उमंग-उल्लास में लक्ष्मी व सरस्वती देवी का पूजन करके अपने ग्राहकों को बुलाकर मिठाई बांटते व ख़ुशी मनाते हैं जिससे उनका व्यापार बढ़े।

दीपावली से नया हिसाब रखना

परमात्मा कलियुग के अंत में आते हैं तब महाभारत की लड़ाई लगती है। परमात्मा सब आत्माओं का हिसाब-किताब चुकता कर देते हैं और सभी को अपने धाम ले जाते हैं। ब्राह्मण आत्माएं जो सतयुग में देवता व त्रेता में क्षत्रिय वंश में अपना पार्ट बजाती हैं उनका वहां कोई हिसाब-किताब नहीं बनता है। द्वापर युग में भक्ति मार्ग के साथ सभी का नया हिसाब-किताब शुरु होता है इसी कारण व्यापारी लोग अपनी रोकड़-बहियां भी इस दिन से नई बनाते हैं। परमात्मा कहते हैं दीपावली पर्व का आध्यात्मिक सत्य रहस्य यही है जो शास्त्रों में नहीं है।

ब्रह्माकुमार वैध विट्ठल केशवदेव, आयुर्वेदाचार्य

*****

....